कला

कला शब्द की उत्पत्ति 'क्र' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है सुंदर, मधुर, कोमल तथा सुख लाने वाला है। अतः जो आनंद उत्पन्न करती है, वही कला है। विभिन्न भाषाओं में कला के लिए विभिन्न शब्द प्रयोग किए जाते हैं। अंग्रेजी भाषा में कला को Art कहते हैं लैटिन भाषा में कला को आर्ष कहते हैं। लैटिन भाषा के आर्ष का वही अर्थ होता है जो संस्कृत की 'अर' धातु का होता है। जिसका अर्थ है 'बजाना' 'रचना' करना, 'पैदा करना' आदि यही अर्थ आर्ष का भी होता है।

सृष्टि कलाकार ने इस सृष्टि की रचना आत्म संतोष के लिए की है। सृष्टि कलाकार एक उच्च कोटी का कलाकार है एवं सृष्टि इसकी सर्वोत्तम कला है। इसे बनाने और नष्ट करने में उसे आनंद की अनुभूति होती है। ठीक उसी प्रकार से कलाकार ही अपनी कलाकृति का खोजकर्ता एवं निर्माता होता है। उसे अपनी कृति की रचना करने तथा उसे नष्ट करने में आनंद की अनुभूति होती है।

कला की परिभाषाएं :- कला की परिभाषाएं एवं स्वरूप के विषय में काफी विचारकों एवं कलाकारों में मतभेद रहे हैं। समयानुसार विभिन्न विचारकों एवं कलाकारों में अपनी-अपनी समझ अनुसार कला से की परिभाषाएं विभिन्न प्रकार से दी गई हैं।

रविन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार :- टैगोर के शब्दों में जो सत्य है, जो सुंदर है, वही कला है।

सूक्ष्म आलेखन :- ये न तो पूरी तरह से प्राकृतिक होते हैं और न ही ज्यामितीय आधार पर बनाए जाते हैं। बल्कि भिन्न वस्तुओं के आकार में परिवर्तन करके बनाया जाता है।

ज्यामितिय आलेखन :- जो रचनाएं ज्यामितिय रेखाओं, वृत्ती, आयतों, त्रिभूजों का सहारा लेकर बनाई जाती है। उन्हें ज्यामितिय आलेखन कहा जाता है।

Importance Of art and craft and Education

शिक्षा का मतलब केवल किसी ज्ञान से नहीं है हम अगर अपने अतीत की ओर देखें और सोचे तो हम यह देखते हैं कि शिर्फ शब्द ज्ञान ही और केवल अध्ययन से ही काम नहीं चलता है। हम अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए शब्दों के अलावा रंग, रूप, रेखाओं एवं अन्य वस्तुओं का भी सहारा लेते हैं। कला एवं क्राफ्ट को शिक्षा में इसी उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखकर एक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। जब हम किसी देश की उन्नति व विकास के बारे में जानना चाहते हैं तो सबसे पहले वहाँ की कला संस्कृति को देखते हैं। शिक्षा का कला में विशेष महत्त्व है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कला और क्राफ्ट अभिव्यक्ति के लिए सशक्त साधन है जो अपनाने में भी सरल है।

रंग

रंग :- कला में छः तत्त्वों में से एक है रंग इनका मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। रंगों के बिना मानव जीवन नीरस व बेरंग है। कला क्षेत्र में शायद ही कोई पहलू हो जो रंगों से मुक्त होगा। रंगों के प्रति मानव का आकर्षण आदम युग से ही है। भले ही वह कमरे के रंग योजना, बाग-बगीचों में फूल-पौधों के रंग योजना न हो। किसी विद्वान ने सच ही कहा है कि रंगों की अपनी ही एक दुनिया है। प्रत्येक रंग कुछ न कुछ कहता है भला कौन-सा व्यक्ति ऐसा जिसे रंग आकर्षित न करते हैं।

डॉ एस के द्विवेदी के अनुसार :- "प्रकाश के परावर्तन से आँखों पर पड़ने वाले प्रभाव को रंग कहते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि रंग कोई वस्तु, पदार्थ नहीं है। यह अक्षपटल द्वारा मस्तिष्क पर पड़ने वाला प्रभाव है।

रंगो के गुण

रंगत :- यह रंग की प्रकृति होती है। जैसे- लालपन, पीलापन, नीलापन यह रंग का वह गुण होता है जिससे लाल, पीले व नीले रंगों के मध्य का अंतर माना जाता है।

मान :- यह रंगत के हल्के तथा गहरे रंग का परिचायक है। जैसे- हल्का सफेद रंग मिला दिया जाए तो उस रंग का मान बढ़ जाएगा। यदि

काला रंग मिला दिया जाए तो उसका मान घट जाएगा।

संघनता :- यह गुण रंग की शुद्धता का परिचायक होता है। रंग में भूरापन व धुमिलता कितनी है। यह संघनता के द्वारा ही जाना जाता है। जितना तीव्र या तेज रंग होगा उसकी संघनता व सुंदरता उतनी ही अधिक होगी। किसी भी रंग में उदासीन या धुमिल रंग मिला देने से हम उसकी संघनता कम कर सकते हैं।

रंगो के प्रकार

प्रथम श्रेणी :-

यह प्रथम श्रेणी के आधारभूत रंग होते हैं। इनका नियोजन नहीं किया जा सकता। इनका अपना ही अस्तित्व होता है और ये पूर्ण रूप से शुद्ध होते हैं।
जैसे — लाल, पीला, नीला।

द्वितीय श्रेणी :- किन्हीं दो प्राथमिक रंगो के आपसी मिश्रण से बनने वाले रंग द्वितीय श्रेणी के रंग कहलाते हैं। जैसे — लाल + पीला = संतरी।

तृतीयक श्रेणी :- द्वितीयक रंगो के आपसी रंगो से बनने वाले रंगो को तृतीयक श्रेणी के रंग कहते हैं।
जैसे — हरा + नारंगी = घोड़ा रंगी।

उदासीन रंग :-

सफेद, काला, स्लेटी उदासीन रंगो की श्रेणी में आते हैं। जो विभिन्न रंगो के मान को बदलने में प्रयोग में लाए जाते हैं।
जैसे — लाल + सफेद = गुलाबी

देशभक्त भामाशाह

पात्र :- महाराजा प्रताप, कुछ सरदार, एक घोड़ा, भामाशाह
स्थान :- मेवाड़ का सीमा प्रदेश ।

महाराणा प्रताप घोड़े पर सवार होकर सबसे आगे चल रहे हैं, उनके पीछे-पीछे अनेक घुड़सवार, सरदार आ रहे हैं।

प्रताप :- प्यारे वीरों बड़े दुःख की बात है कि आज हमें स्वर्ग से भी अधिक सुंदर और जननी से भी अधिक प्रिय अपनी जन्मभूमि को त्यागना पड़ रहा है। आश्चर्य है कि जिसकी रक्षा के लिए हमारे पूर्वजों ने रक्त की धाराएं बहाई जिसे बचाने के लिए उन्होंने हँसते-हँसते अपने प्राणों को अर्पित कर उसी मातृभूमि मेवाड़ को आज प्रताप इस प्रकार त्याग रहा है।

एक सरदार :- मेवाड़ के महाराणा के मुख से आज हम ऐसे शब्द सुन रहे हैं। महाराणा आप हताश न हो। जन्मभूमी के स्वतंत्र होने की अभी पूरी आशा है। अन्नदाता जी मेवाड़ के लिए इतना उठा रहें हैं। उसके प्रति हमारा भी कुछ कर्त्तव्य है। इसकी रक्षा करना हमारा भी धर्म है।

प्रताप :- रक्षा मेवाड़ की रक्षा असंभव बिल्कुल, असंभव यह मेवाड़ की रक्षा हो रही है कि आज कायरों की भांति प्रताप उसे त्याग रहा है। विवश हो अंतिम प्रणाम करने के लिए तैयार है।

दूसरा सरदार :- (कुछ आशा और उत्सव भरे स्वर में) महाराणा आप निराश न हो जब तक हम में दम है तब तक हम शत्रुओं को मेवाड़ से निकाल कर ही रहेंगे आप देखेंगे कि एक बार फिर मेवाड़ के ध्रुव पर सिसोधिया वंश की पताका लहराने लगेगी ।

प्रताप :- वीरो, मैं जानता हूँ आप लोग यह बात मुझे धीरज बंधाने के लिए कह रहे हैं। नहीं तो मेवाड़ के स्वतंत्र होने की अब क्या आशा है। चित्तौड़ की चप्पा-चप्पा भूमि पर अब शत्रुओं का अधिकार हो गया है, परंतु आप सब अब भी मेवाड़ के स्वतंत्र होने का स्वप्न देख रहे हैं असंभव ऐसी साधनहीन अवस्था में किसी अनजाने स्थान पर चलकर ही दिन काटना ठीक रहेगा।

पहला सरदार :- आप की आज्ञा मानने को हम तैयार हैं। परंतु महाराज ....।

प्रताप :- (बीच में ही आँखों में आंसु भर कर मेवाड़ की ओर देखते हुए) वीरों, परंतु कुछ नहीं। चलो अब मेवाड़ की ममता छोड़ दो यदि भाग्य ने पलटा खाया और एक लिंग भगवान ने मदद ~~की~~ की तो संभव है कि फिर कभी मेवाड़ के दर्शन होगें। उसे अंतिम प्रणाम कर अपने घोड़े बढ़ाते हैं। इसी समय महाराणा के पुराने मंत्री घोड़ा दौड़ाते हुए आते हैं। भामाशाह पुकारते हैं महाराज ठहरिए, मेवाड़ के मुकुटमणी महाराज सुनिए (महाराणा पीछे देखते हैं) भामाशाह को आते देख कहने लगते हैं। मंत्रीवर तुम इतने अधीर क्यों हो इस प्रकार किस लिए घबरा रहे हो (भामाशाह अपने घोड़े से उतरकर महाराणा के घोड़े की लगाम पकड़ लेते हैं।)

भामाशाह :- महाराज आज आप धन की कमी के कारण मेवाड़ छोड़ कर बाहर जा कर रहे हैं। यह मेरे लिए लज्जा की ~~बात~~ बात है। अन्नदाता, आप पैसे के अभाव में मेवाड़ त्यागने के लिए विवश हो और मैं प्रचुर धन राशि सहित मेवाड़ में बैठा रहूँ। इसे अधिक मेरे लिए डूब मरने

की बात नहीं हो सकती है। (महाराज भामाशाह को हृदय से लगा लेते हैं और उनकी आँखों से आँसु बहने लगते हैं।)
भामाशाह महाराणा को कहते हैं हिम्मत न हारिए, धैर्य न त्यागिए धन की कमी के कारण मेवाड़ की रक्षा का विचार छोड़कर बाहर न जाइए।

महाराणा :- भामाशाह, अब इसके अतिरिक्त उपाय ही क्या है। मेरी स्थिति तुम से छिपी नहीं है ऐसी दशा में मैं और कर ही क्या सकता हूँ।

भामाशाह :- महाराज मेरी विनती यह है कि आप एक बार चित्तौड़ की तरफ घोड़ा मोड़िए। स्वामी मेरे पास जितना धन है उसे मैं देश व जाति के नाम पर आपके चरणों में अर्पित करता हूँ। उसकी सहायता से एक बार फिर मेवाड़ रक्षा का प्रयत्न कीजिए।

प्रताप :- भामाशाह, मैं तुम्हारी इस उदारता के लिए तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। परंतु.....।

भामाशाह :- अन्नदाता, परंतु कैसी।

प्रताप :- यही कि आप अपने निजी पैसे को इस प्रकार व्यर्थ.....।

भामाशाह :- (बीच में ही बात काटकर) बस महाराज आप जो कहना चाहते हैं मैं ऐसी बात इन कानों से नहीं सुनना चाहता। प्रभु उस धन पर मेरा क्या हक है। सब राष्ट्र की संपति है। धन तो क्या देश के लिए सिर देने की जरूरत पड़े तो उसे देने के लिए भी भामाशाह तैयार है।

महाराणा :- (सरदारों की तरफ देखकर) वीरों आप लोगों की इस विषय में क्या सहमति है क्या एक बार फिर

मेवाड़ की रक्षा का प्रयत्न किया जाए। मेरी राय में तो स्वतंत्रता की रक्षा के लिए भामाशाह की संपत्ति को भी एक बार दाव पर लगा देना चाहिए।

भामाशाह :— महाराज, आप उसे मेरी संपत्ति बताकर लज्जित न करे, उसमें मेरा कुछ भी नहीं है। यह सब धन वेतन के रूप में राजकोष से ही मिला है। यह राष्ट्रीय धन है। इस धन का उपयोग यदि राष्ट्र पर आई विपत्ति के निवारण के लिए न तो मुझमें अधिक पतित कौन होगा।

सरदार लोग :— अन्नदाता, जब मंत्री की ऐसी ही इच्छा है तो एक बार फिर मेवाड़ के उद्धार का प्रयत्न करना चाहिए। भगवान एक दिन हमारी सहायता करेगा।

प्रताप :— (सरदारों से) जब आप लोगों की भी यही राय है तब मुझे भला इसमें क्या संकोच हो सकता है। (भामाशाह से) मंत्रीवर तुम धन्य हो तुम्हारी उदारता कोटी मुखों से धन्य है। तुम मनुष्य नहीं साक्षात देवता हो (भामाशाह महाराणा के चरण पकड़ लेते हैं।)

सब सरदार :— (एक स्वर में) बोलो एक लिंग भगवान की जय, बोलो मेवाड़ के महाराणा की जय, बोलो देशभक्त भामाशाह की जय (सब लोग अपने घोड़ों के मुख मेवाड़ की तरफ करते हैं।)

ॐ कविता ॐ

हिमालय

खड़ा हिमालय बता रहा है,
डरो न आंधी, पानी से,
खड़े रहो तुम अविचल होकर,
सब संकट तूफानों में॥

डिगो न अपने प्रण से तुम,
सब कुछ पा सकते हो प्यारे।
तुम भी ऊँचे उठ सकते हो,
छू सकते हो नभ के तारे॥

अचल रहो जो अपने पथ पर,
लाख मुसीबत आने में।
मिली सफलता जग में उसको,
जीने में मर जाने में।

कविता

तितली और कली

हरी डाल पर लगी हुई थी,
नन्ही सुंदर एक कली।
तितली आकर बोली,
तुम लगती हो बड़ी भली॥

अब जागो तुम आंखे खोलो,
और हमारे संग खेलो।
फैले सुंदर महक तुम्हारी,
महके सारी गली - गली॥

कली छिटक कर खिली रंगोली,
तुरंत खेल की सुनकर बात।
साथ हवा के लगी भागने,
तितली छूने उसे चली॥

लघुनाटिका

शिकार एक शेर का

पात्र परिचय :-

अजीत, पिंकी, रोहित, अश्विनी, शेर खाँ (चाचाजी)

एक बड़ा-सा हॉल, हॉल में दीवारों पर शेर, चीते, हिरण आदि जानवरों की खाल चिपकी हुई है। कुछ पुरानी बंदूके भी लटक रही हैं। एक दो कलैंडर भी दीवारों पर टंगे हुए हैं, हॉल के बीचों-बीच एक बड़ा-सा पलंग, पलंग पर चाचा शेर खाँ बैठे हुए एक बंदूक की सफाई कर रहे हैं।

चाचा शेर खाँ :- आज देखूँगा उस शेर के बच्चे को रोज चकमा देकर भाग जाता है। बच्चु कब तक बचेगा शेर खाँ के वार से (दरवाजे पर दस्तक, तीन बच्चों का प्रवेश)

बच्चे :- (मिलकर) बहुत बढ़िया।

शेर खाँ :- अच्छा ये बताओ कि आज कैसे याद आई सबको चाचा की।

बच्चे :- चाचा जी आज हम भी आपके साथ शेर के शिकार के लिए जंगल में चलेगें।

पिंकी :- आज कोई बहाना नहीं चलेगा।

चाचा शेर खाँ :- वाह, वाह क्या कमाल है। बहुत मजा आएगा चलो तैयारी करते हैं।

बच्चे :- पर ....।

चाचा शेर खाँ :- पर क्या बच्चों।

बच्चे :- चाचा जी वह अपना लंगोटिया है न उसे भी साथ ले चलना है। पता नहीं वह कहाँ अटक गया बस आता ही होगा। थोड़ी देर रूक जाइए न प्लीज।

University Roll No. ....

चाचा शेर खाँ :– भई जैसी तुम सब की मर्जी।
अजीत :– चाचा जी एक बात पूछूं मैं आपसे बुरा तो नहीं मानोगे।
चाचा शेर खाँ :– एक नहीं दो पूछो। बुरा मानने की क्या बात हैं इसमें भला।
अजीत :– चाचा जी आपका नाम शेर खाँ कैसे पड़ा।
चाचा जी :– दरसल बात यह है कि बचपन से ही मुझे शिकार करने का शौक रहा है, और शिकार भी 'शेर' का इसलिए मेरा नाम शेर खाँ रख दिया।
पिंकी :– चाचा जी आपने अब तक कितने शेर मारे होगें।
चाचा जी :– (मूछों को ताव देकर) यहीं कोई एक सौ।
रोहित :– (शरारती अंदाज में) असली या नकली।
चाचा जी :– (आँखे फाड़ते हुए) सौ प्रतिशत असली।
पिंकी :– (रोहित से) तो आज देख लेना तुम्हारे सामने ही चाचा जी शेर का शिकार करेंगें।
रोहित :– चाचा जी, कोई मजेदार किस्सा सुनाइए न।
चाचा जी :– सुनाता हूँ। उस रोज हमारी बंदूक में एक ही गोली थी हमने देखा की जंगल में ढ़ेरो शेर घूम रहे हैं।
पिंकी :– (आश्चर्य से) अच्छा।
चाचा जी :– हाँ हमने एक शेर पर गोली चला दी धांय-धांय।
रोहित :– फिर क्या हुआ चाचा जी, क्या दूसरे शेर आप पर टूट पड़े।
चाचा जी :– अरे नहीं बच्चों सारे शेर डर गए और दुम दबाकर भाग गए।
अजीत :– आगे क्या हुआ चाचा जी।

चाचा जी :- भागते-भागते जब शेर थक गया तो हमसे माफी मांगने लगा। हमारी खूब आवभगत की।

रोहित :- फिर चाचा जी क्या आप वहाँ रुके।

चाचा जी :- नहीं बच्चो हमारे पास समय ही कहाँ था। हमने आज्ञा मांगी और वापिस आ गए। इसी को शिकार कहते हैं समझे बच्चों।

अश्विनी :- चाचा जी, माफ करें काम ही ऐसा था क्या करें।

चाचा :- अजीत मेरी बंदूक तो उठाना।

अजीत :- ये लो चाचा जी (चाचा जी उठते हैं, बच्चे भी पीछे-पीछे खड़े हो जाते हैं।) तभी शेर के गर्जने की आवाज आती है।

अजीत :- चाचा जी लगता है शेर खुद ही आपसे मिलने आया है।

चाचा जी :- श_ श_ श - मेरी बंदूक तो लाना।

पिंकी :- चाचा जी वह तो आपके हाथ में है (तभी शेर बना राम कूदकर अंदर आता है।)

सभी बच्चे :- मजा आ गया (चाचा जी पर पानी डालकर होश में लाते हैं।)

चाचा जी :- क्या शेर मर गया।

राम :- नहीं तो चाचा जी (पूरी कहानी सुनाता है व नकली खाल दिखाता है।)

चाचा जी :- चल हट शैतान (हल्की सी चपत लगाते हैं)

बच्चे :- (चाचा जी जिंदाबाद) के नारे लगाते हैं।

(चाचा जी पलंग पर बैठकर फिर अपनी बंदूक साफ करने लग जाते हैं।)

परदा गिरता है।

सिनेमा और इलैक्ट्रोनिक मिडिया

शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में आजकल सिनेमा और इलैक्ट्रोनिक मिडिया साधनों का प्रयोग किया जाता है।

चलचित्र अथवा सिनेमा :-

मुकचित्र का दूसरा रूप है। इसमें चित्र की भांति क्रियांए भी दिखाई देती हैं। साथ ही ध्वनि की व्यवस्था भी होती है। इस प्रकार सिनेमा 20वीं शताब्दी की शिक्षा का सस्ता सुलभ एवं यंत्रीकृत महत्वपूर्ण साधन है। इसका प्रयोग रेडियो और टीवी के द्वारा अधिक प्रभावशाली होता है।

इसके लाभ निम्नलिखित हैं

1. चलचित्र द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान अन्य उपकरणों की अपेक्षा अधिक स्थाई होता है। क्योंकि इसमें देखने व सुनने की इन्द्रियां सक्रिय होती हैं।

2. चलचित्र वैज्ञानिक, औद्योगिक तथ्यों तथा उसके प्रभावों एवं ऐतिहासिक घटनाओं और वैज्ञानिकों के साक्षात्कार कराने में सहायक है।

3. चलचित्र द्वारा बालकों को विभिन्न देशों की स्थितियों तथा मानव और उसके कार्यालयों का ज्ञान सफलतापूर्वक कर दिया जाता है।

4. चलचित्र द्वारा बालकों की कल्पना शक्ति को विकसित करके उनकी निरिक्षण शक्ति का विकास किया जाता है।

समाचार संबंधी फिल्म

समाचार संबंधी फिल्म से तात्पर्य उन फिल्मों से जिसके द्वारा बालकों को सामाजिक विषयों की शिक्षा दी जाती है। ऐसी फिल्मों द्वारा जनता को देश की राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन से संबंधित समाचार भी दिए जाते हैं। इस देश के प्रत्येक नागरिकों को अपने देश के संबंध में महत्त्वपूर्ण समाचार प्राप्त हो जाते हैं।

दूरदर्शन :- टैलीविजन भी रेडियो की भांति 20वीं शताब्दी की वैज्ञानिक उपलब्धियों में शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। रेडियो द्वारा तो हम उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्रियों तथा कलाकारों को केवल वाणी ही सुन सकते हैं। लेकिन टैलीविजन के माध्यम से हम उन्हें देख भी सकते हैं।

टेप रिकॉडर :-

शैक्षिक उपकरण के रूप में टेप रिकॉडर एक नया उपकरण है। कोई भी व्यक्ति इसके अंदर अपनी ध्वनि को भर कर या रिकॉर्ड करके सुन सकता है। इस दृष्टि से टेप रिकॉडर का प्रयोग जहाँ एक ओर महापुरुषों के प्रवचन नेताओं के भाषण एवं प्रसिद्ध कलाकारों की कविताएं तथा भाषण सुनने में किया जाता है।

रेडियो :- रेडियो के जन्म की कहानी 1885 ई० में शुरू की गई आधुनिक जीवन में रेडियो का विकास इतना अधिक हो गया कि अब भी हमारे लिए आवश्यकता की वस्तु बन गई है। रेडियो द्वारा बालकों को उच्चकोटी

के शिक्षा शास्त्रीयों से राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के विकास में उनके भाषण सुनने को मिलते हैं।

ग्रामोफोन लिंग्वा फोन :-

ग्रामोफोन तथा लिंग्वा फोन भी रेडियो की भांति शिक्षण के महत्वपूर्ण उपकरण है। ग्रामोफोन द्वारा बालक को भाषण तथा गाने की शिक्षा दी जाती है। लिंग्वा फोन द्वारा बालकों को उच्चारण शुद्ध करवा कर भाषण की शिक्षा दी जाती है।

संगीत

संगीत एक कला है जो मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। यह प्रकृति के कण-कण में व्यापत है। विभिन्न धर्मों के लोग संगीत की उत्पत्ति का श्रेय देवी-देवताओं को देते हैं तथा अनेक मत प्रस्तुत करते हैं। सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा जी ने यह कला शिवजी को दी। जिसने सरस्वती से प्राप्त की गंधर्व, किन्नर एवं अप्सराओं को संगीत शिक्षा प्रदान करने वाले नारद जी पर सरस्वती देवी की कृपा रही। भरत, नारद आदि ऋषियों द्वारा यह कला धरती पर पहुँची। पंडित दामोदर कृत संगीत दर्पण में संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा जी द्वारा मानते हुए, सात स्वरों की उत्पत्ति पक्षियों द्वारा भी बताई गई है। मयूर से सटज, चातक से ऋषभ, बकरे से गांधार, कौए से मध्यम, कोयल से पंचम, मेंढक और हाथी से निषाद स्वरों की उत्पत्ति हुई है। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार शब्द संगीत की उत्पत्ति है।

नृत्य

भारत में नृत्य बहुत प्राचीन काल में एक समृद्ध और परंपरागत रहा है। विभिन्न कलाकारों के साहित्यिक स्त्रोतो, मूर्तिकला और चित्रकला से व्यापक प्रमाण उपलब्ध होते हैं। भारतीय जनता के धर्म तथा समाज में नृत्य ने एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया था। जबकि आज प्रचलित शास्त्रीय रूपों या 'कला' के रूप में परिचित विविध नृत्यों के विकास

और निश्चित इतिहास को सीमांकित करना आसान नहीं है। साहित्य में पहला संदर्भ वेदों से मिलता है। जहाँ नृत्य व संगीत का उदगम् है। नृत्य का एक ज्यादा संयोजित इतिहास महाकाव्यों, अनेक पुराण, नाटकों का समृद्ध कोष, जो संस्कृत में काव्य और नाटक के रूप में जाने जाते हैं। इसे पुनर्निर्मित किया जा सकता है। शास्त्रीय संस्कृत नाटक का विकास एक वर्णित विकास है। जो मुखरित शब्द, मुद्राओं और आकृति ऐतिहासिक वर्णन संगीत तथा शैलीगत गतिविधि का एक सम्मिश्रण है। यहाँ 12वीं सदी से 19वीं सदी तक अनेक प्रदर्शित रूप हैं। जिन्हें संगीतकार खेल या संगीत नाटक कहा जाता है। संगीतात्मक खेलों में से वर्तमान शास्त्रीय नृत्य रूपों का उदय हुआ।

भरतनाट्यम नृत्य

भरत नृत्य 2000 साल से व्यवहार में है भरतमुनी के नाट्यशास्त्र के साथ प्रारंभ हुए अनेक ग्रंथों से इस नृत्य रूप पर जानकारी प्राप्त होती है। नंदिकेश्वर द्वारा रचित अभिनय दर्पण भरतनाट्यम नृत्य में शरीर की गतिविधि के व्याकरण और तकनीकी अध्ययन के लिए ग्रंथीय सामग्री का एक प्रमुख स्त्रोत है यहाँ प्राचीन काल की धातु और पत्थरों की प्रतिमाओं तथा चित्रों में इस नृत्य रूप के विस्तृत व्यवहार के दर्शनीय प्रमाण मिलते हैं। चिदम्बरम मंदिर के गोपुरमों पर भरतनाट्यम नृत्य की भंगिमाओं की एक श्रृंखला और

मूर्तिकार द्वारा पत्थरों को काटकर बनाई गई प्रतिमाएं देखी जा सकती हैं।

अनेकों मंदिरों की मूर्तिकला में नृत्य की चारी और करणों को प्रस्तुत किया गया है और इससे इस नृत्य का अध्ययन किया जा सकता है। भरतनाट्यम एक एकल नृत्य है और बहुत अधिक झुकाव अभिनय या नृत्य के स्वांग पहले - नृत्य पर होता है। जहाँ ~~नृत्के~~ नर्तकी गतिविधि और स्वांग द्वारा साहित्य को अभिव्यक्त करती है।

रेखाएं, बिन्दु, क्षितिज रेखाएं, खड़ी रेखाएं

बिन्दु :- बिन्दु एक छोटा-सा गोल चिह्न होता है परंतु बिन्दु की लं०, चौ०, मोटाई कुछ नहीं होती है। दूसरे शब्दों में रेखाखंड का वह छोटे से छोटा चिह्न जिसको और न घटाया जा सके, उसे बिन्दु कहते हैं।

रेखा :- रेखा की लं० होती है चौ० नहीं होती। यह ज्यामितिय सिद्धांत है। रेखाएं कई प्रकार की होती है।

1. सीधी रेखा :-
दो बिन्दुओं के बीच की छोटी से छोटी लं० अथवा कम-से-कम दूरी को सीधी रेखा कहते हैं।

2. वक्र रेखा :-
जो रेखा किसी भी स्थान पर सीधी नहीं होती, उसे वक्र रेखा कहते हैं।

3. क्षितिज रेखा :-
जो रेखाएं भूमि के समतल आधार के संमातर खींची जाती है, उसे क्षितिज रेखाएँ कहते हैं।

4. खड़ी रेखा :-
जो रेखाएं समतल के ऊपर लंब रूप में खड़ी होती है, उन्हें खड़ी रेखाएं कहते हैं।

5. समानांतर रेखा :-
दो या दो से अधिक रेखाएँ, जिनके दोनों ओर घटने या बढ़ने पर भी न मिलें और उनके बीच का अंतर समान रहे, संमातर रेखाएं कहते हैं।

Creative Activities

भगवान को सृजनहारा माना गया है। जिसने स्वयं सृष्टि की रचना की है। मानव भी भगवान की तरह अपनी सृजनात्मकता के द्वारा हर क्षेत्र में नए-नए आयाम स्थापित करता है। सृजनात्मक का शिक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान है। मस्तिष्क तथा रचना सृजन के ही रूप हैं। पाठ्यक्रम के अलावा कुछ अन्य गतिविधियाँ भी विद्यालय में की जाती हैं।
जैसे :- अभिनय करना, मूक करना, वाचन करना तथा एकल अभिनय करना इत्यादि।

सृजनात्मक गतिविधियों का महत्त्व :-

1. इससे छात्रों की प्रतिभा का विकास होता है।
2. वे अपने मन के विचारों को सभी के सामने रख पाना सीखते हैं।
3. अनुशासन का महत्त्व जान पाते हैं और अनुशासनात्मक भावना भी पैदा होती है।
4. समय का सदुपयोग करना सीखते हैं।
5. सामाजिकता का विकास होता है।
6. कई बार बच्चे अनेक प्रकार की कुप्रथाओं का शिकार हो जाते हैं। सृजनात्मकता के कारण इससे बचाव किया जा सकता है।
7. एक-दूसरे के सामने आकर बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं।
8. इससे सहयोग एवं एकता की भावना का विकास होता है। इन क्रियाओं से बच्चों में आत्मविश्वास व

आत्मविकास उत्पन्न होता है। वास्तव में बच्चे का चहुमुखी विकास करने में सृजनात्मक गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

मूक अभिनय :-

इसमें व्यक्ति अपने भावों व शरीर की गतिविधियों के माध्यम से प्रदर्शन करता है। इस अभिनय में व्यक्ति बोलता नहीं है। इसमें एक ही व्यक्ति अलग-अलग किरदारों की भूमिका निभाता है। लेकिन वह अपनी स्वयं की आवाज का प्रयोग करता है।

मिमिकरी :-

इसमें व्यक्ति अलग-अलग किरदारों, जानवरों व अलग-अलग आवाजों को प्रस्तुत करता है। वह उनकी भूमिका नहीं निभाता बल्कि उनकी आवाज का प्रदर्शन करता है।

संतुलन

कलाकार रचना करते हैं, उस समय सिद्धांतों का ध्यान रखते हैं। उनमें संतुलन का सिद्धांत महत्त्वपूर्ण है। सामान्य जीवन में संतुलन होना आवश्यक है। यदि व्यक्ति की लंबाई अधिक व शरीर पतला तो वह बहुत भद्दा लगता है। इसलिए संतुलन का हर क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

कला में संतुलन

कोई भवन या इमारत में बड़ा दरवाजा है। उसमें खिड़कियाँ बराबर बनाते हैं, तो इमारत में संतुलन दिखाई देता है। जब कलाकार समूह में नृत्य या गान करते हैं तो उनमें होने से वह बहुत सुंदर लगता है।

University Roll No. .... Page No: 24

बनावट

प्रत्येक पदार्थ की बनावट होती है। यही बनावट उस वस्तु के विशेष गुण, प्रभाव व विशेषता होती है। बनावट का अनुभव देखने व स्पर्श करने से होता है। कोई वस्तु, पदार्थ कोमल, मोटा, पतला, खुरदरा व ठंडा - गर्म हो सकता है। अलग-अलग वस्तुओं की बनावट भी अलग-अलग होती है। वास्तुकला की आंतरिक व बाह्य बनावट में अंतर होता है। बनावट का अनुभव मनुष्य को स्वभाविक रूप से होता है।

चित्रकला तकनीकी माध्यमों से बनावट को उभार देता है। चित्रण में कहीं खुरदरापन, कहीं चिकनापन, कहीं छाया, कहीं प्रकाश को कलाकार अलग - अलग रंगों से दर्शाता है। हर दशा में कलाकार बनावट का मान रखता है। बनावट का रंग के साथ बहुत गहरा संबंध है। कोमल रंगों के लिए धरातल को सपाट और चिकना तथा कठोर रंगों के लिए धरातल खुरदरा उपयोग किया जाता है।